रामचरितमानस में लोकाचारों का महत्त्व निरूपण

डॉ रमाकान्त राय

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस पांच सौ वर्ष से अधिक समय से भारतीय जनमानस को धर्म और मोक्ष की शिक्षा दे रहा है। जब भारतवर्ष में म्लेच्छों का प्रभाव बढ़ गया, धर्म की हानि होने लगी, मंदिर ढहाये जाने लगे, लोगों के निजी और सार्वजनिक जीवन में बाहरी लोगों का हस्तक्षेप बढ़ गया तो भारतीय जनमानस कराह उठा। गोस्वामी तुलसीदास के कालखंड के विषय में विवेचन करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रन्थ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा है- "देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देव मन्दिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुसलिम-साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिंदू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिये भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?" ऐसे कालखंड में श्रीरामचरितमानस की रचना कर गोस्वामी तुलसीदास ने उत्तर भारतीय लोगों का संस्कार किया। उन्हें जीवन की दृष्टि ही नहीं दी अपितु नए बर्बर, आततायी आक्रान्ताओं से अपने लोकाचार और परम्पराओं को सुरक्षित रखने में योगदान किया। उनके सम्बन्ध में लिखते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा है- "अपने दृष्टि विस्तार के कारण ही तुलसीदास जी उत्तरी भारत के समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं। भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि किसी को कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को।" यह सब विरुद तुलसीदास जी को जिन कारकों से मिली है, उसमें एक है उनके सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस में लोकाचार निरूपण।

लोकाचार शब्द लोक और आचार दो शब्दों के मेल से बना है। किसी समाज के सदस्यों से जुड़ी धारणाएँ एवं प्रवृत्तियाँ लोकाचार कहलाती हैं। आचार में जो चर धातु है, वह गतिमानता का परिचायक है। जीवन्तता का सूचक है। अपने जीवनचर्या से सम्बन्धित विश्वास, अभिक्रियाएँ और क्रियाकलाप लोकाचार का अंग हैं। लोकाचार ग्रीक शब्द Ethos का अनुवाद है, जो किसी समूह अथवा व्यक्ति के चरित्र के लिए संकेतक है। इसमें किसी विशिष्ट समुदाय के सामान्य और विशेष अवसर पर किये जाने वाले व्यवहार को लोकाचार कहा जा सकता है।

गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत श्रीरामचरितमानस की रचना प्रक्रिया से लेकर उसमें वर्णित कथा में जिन लोकाचारों का अंकन है, वह आज भी भारतीय लोगों के लिए आदर्श है। भारतीय किसी भी कार्य का आरंभ

स्तुति और मंगलाचरण से करते हैं। इस महान ग्रन्थ का आरम्भ भी वर्ण, अर्थ समूह, रस, छन्द और मंगल करने वाली सरस्वती और गणेश की वंदना से हुआ है -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।

मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।।

तुलसीदास ने इस ग्रन्थ के आरंभ में समस्त इष्टदेव यथा, देवी सरस्वती, श्री गणेश, महादेव, पार्वती, गुरु, श्रीरामचन्द्र, श्री वाल्मीकि और हनुमान जी की क्रमशः वंदना की है। गुरु की वंदना के साथ साथ उन्होंने सत और असत शक्तियों की आराधना की है। खल वंदना को भी उन्होंने इसमें प्राथमिकता दी है-

बंदउँ संत असज्जन चरना। दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना॥

बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुःख दारुन देहीं॥

आचार्य कुबेरनाथ राय ने अपने निबंध 'भवानी शंकरौ वन्दे' में श्रीरामचरितमानस के मंगलाचरण पर विचार करते हुए लिखा है- "गोसाईं जी जानते थे कि इस श्रद्धा-विश्वास रूप अन्तस्थ ईश्वर को जगा दिया जाए तो वह टूटा दर्पण जिसमें ज्ञान, इच्छा और क्रिया के तीनों केन्द्र परस्पर टूटकर विच्छिन्न हो गए हैं, अपने आप जुड़ जाएगा। एक तरह यह श्लोक गोसाईं जी, क्या सम्पूर्ण भक्ति आन्दोलन का ही सार उपस्थित कर रहा है।" वह आगे लिखते हैं - "गोसाईं जी ने प्रत्येक काण्ड में मंगलाचरण में (सुन्दर कांड को छोड़कर- परन्तु वहां भी मारुती की वंदना है जो एकादशवें रूद्र के अवतार हैं) शैव वंदना प्रस्तुत की है। महाकाव्य के प्रारंभ में तीन श्लोकों में शैव वंदना है, तो तीन श्लोकों में वैष्णव वन्दना और और सातवें श्लोक में उद्देश्य कथन है। प्रथम श्लोक की वाणी और विनायक की वंदना शैव वंदना है क्योंकि वाणी का एक रूप है 'महासरस्वती'। यह दुर्गा का तृतीय रूप है, जिसके द्वारा शुम्भ-निशुम्भ वध संपन्न होता है।"

वंदना और मंगलाचरण के सैद्धान्तिक पक्ष से इतर इस महाकाव्य में उन लोकाचारों के बारे में बात करेंगे जो कथा में विभिन्न अवसरों पर दिखाई देता है और जिसका सामाजिक महत्त्व है। ऐसे अवसर इस महाकाव्य में अनगिनत हैं। सबका विशेष महत्त्व भी है। इनमें से कुछ चुनिन्दा लोकाचारों के विषय में बात करना सार्थक और उपयोगी होगा।

श्रीरामचरितमानस में भगवान् शिव के विवाह की कथा बहुत विस्तार से और रोचक तरीके से कही गयी है। पार्वती की तपस्या और शिव से उनके विवाह का प्रसंग प्रेम का बहुत उत्कृष्ट वर्णन बनता है। इस कथा के आरम्भ में तुलसीदास जी ने कई ऐसे लोकाचारों का वर्णन किया है, जो बाद में भी उत्तर भारतीय समाज में महत्त्व पाती आई हैं। पार्वती विवाह से पूर्व सती की कथा में आता है कि सती पिता दक्ष प्रजापति के घर बिना बुलाये जाने का टेक लेती हैं। भगवान् शिव सती से कहते हैं-

जौं बिनु बोलें जाहु भवानी। रहइ न सीलु सनेहु न कानी।।

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा॥

तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गएँ कल्यानु न होई॥

तुलसीदास इस प्रसंग में शील और आचार से सम्बंधित बहुत महत्त्व की स्थापना करते हैं कि बहुत अपनत्व मानने वाले लोगों के यहाँ भी यदि कोई विरोध मानता है तो जाने से कल्याण नहीं होता। बहुत प्रकार से समझाने के बाद भी जब सती नहीं मानती हैं तो वह उन्हें विदा करते हैं। वहां उनका निरादर होता है।

दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकी जरे सब गाता॥

सतीं जाइ देखेउ तब जागा। कतहूँ न दीख संभु कर भागा॥

अतिथि के सम्मान का तरीका यह है कि उसके आगमन पर उसका कुशल क्षेम जानना चाहिए। न पूछना निरादर है। यह एक बात बहुत सहज तरीके से कही गयी है और आज भी यह सामान्य शिष्टाचार का अंग है। उमा के जन्म का प्रसंग इसी के अनंतर आता है और कथा प्रवाह में जब हिमाचल के यहाँ नारद आते हैं तो-

सैलराज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि बर आसनु दीन्हा।।

यह सम्मान का एक और तरीका है। पाँव पखारना, प्रक्षालन करना, धोना। हिमाचल नारद मुनि का सत्कार करते हैं तो वह-

नारी सहित मुनि पद सिरु नावा। चरण सलिल सबु भवनु सिंचावा।।

पाँव प्रक्षालन, प्रणाम करना, चरण रज लेना आदि भारतीय परिवारों में सामान्य शिष्टाचार है। जब गाधितनय विश्वामित्र जी राजा दशरथ के यहाँ पधारते हैं तब राजा दशरथ ने भी-

करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी॥

चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा॥

श्रीरामचरितमानस में बालकों का संस्कार इसमें भी है कि उन्हें घर में क्या सिखाया जाता है। श्रीराम चन्द्र अपने भाइयों के साथ मृगया करने जाते हैं, साथ बैठकर भोजन करते हैं, माता पिता की आज्ञा का अनुसरण करते हैं। उनकी दिनचर्या ऐसी है जिसमें-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु-पिता गुरु नावहिं माथा।।

आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा॥

शिव विवाह प्रसंग में भगवान् शिव की बारात बहुत धूमधाम से निकली है। औघड़दानी शिव का बाना देखकर सुरत्रिय मुस्करा रही हैं। विष्णु और ब्रह्मा देवताओं के साथ बारात के लिए निकले हैं। अद्भुत बारात है। जब यह बारात हिमाचल के द्वार पहुंचती है, तो वह “चले लेन सादर अगवाना।” उनकी अगवानी

की गयी, आरती उतारी गयी। सुमंगल गाकर स्वागत हुआ। मैना "परिछन चली हरहि हरषानी।" विवाह के समूचे प्रसंग में वह समस्त क्रियाकलाप होता है, जो किसी मांगलिक अवसर पर किया जाता है। यही समस्त क्रिया कलाप श्रीराम विवाह में भी होता है।

तुलसीदास जीवन के विविध प्रसंगों में इस तरह के शताधिक आचारों का उल्लेख करते हैं। जब श्रीराम वनगमन करते हैं तो वन प्रवास की अवधि में सांथरी बिछाना, छोटे भाई लक्ष्मण द्वारा पाँव दबाना, बटुकों के साथ विमर्श करना, ऋषियों से गुण ग्रहण करना, सखा निषादराज को 'अनेक बिधि सखहि सिखावन दीन्ह' आदि ऐसे ही गुण हैं, जो सामान्य मानवी के जीवन से जुड़ जाता है। उसके दैनिक जीवन का अंग होता है। जब श्रीराम रात्रि विश्राम करते हैं तब वह छोटे भाई और भार्या को प्राचीन कहानियाँ सुनाते हैं। जिनसे शिक्षा और उपदेश पाना रहता है, उनसे प्राप्त करते हैं और जिन्हें देना रहता है, उन्हें बहुत सलीके से प्रदान करते हैं।

न केवल श्रीराम अपितु इस महाकाव्य के अन्य चरित्र भी अपने क्रिया कलाप और आचरण से लोगों को सीख देते हैं। श्री हनुमान एक ऐसा ही चरित्र हैं- अपने बल और बुद्धि विवेक से उदासीन किन्तु स्मरण करा देने के उपरान्त असंभव को भी संभव कर देने वाले। जब जाम्बवंत उन्हें स्मरण कराते हैं तो वह समुद्र को पार कर जाते हैं। ऐसा करते हुए वह सबकी मर्यादा का ध्यान करते हुए चलते हैं। मार्ग में सुरसा मिलती है तो वह उसका अनादर नहीं करते। राम काज के लिए समर्पित हनुमान सुरसा के रोकने पर कहते हैं कि पहले उन्हें वह काम कर आने दो, जिसके निमित्त वह निकले हैं-

"राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहिं सुनावौं।।"

हनुमान सुरसा से बहुत आदर सहित बात करते हैं, उन्हें माता कहकर संबोधित करते हैं। एक अनजान स्त्री से संवाद का यह प्रसंग भारतीय परम्परा का अंग है। सुरसा भी हनुमान के बल बुद्धि का ज्ञान पाने के बाद आशीष देती हैं। आगे बढ़ने पर लंकिनी को "मुठिका एक महा कपि हनी" क्योंकि वह अभद्र तरीके से बात कर रही थी। हनुमान के आचार का सर्वोत्कृष्ट रूप अशोक वाटिका और रावन की सभा में मिलता है। वह जब विभीषण के आवास पर पहुँचते हैं तब भी सचेत हैं। 'भिन्न मन्दिर' उनको चैतन्य करती है। सीता को देखने के बाद हनुमान बहुविधि ध्यान रखते हैं कि उनकी प्रस्तुति सीता जैसे पतिव्रता और एकनिष्ठ के लिए अनुकूल रहे। वह सीता को ढाढस बंधाते हैं। श्रीराम के प्रेम का परिचय देते हैं। प्रेम का यही स्वरुप भारतीय है। यही स्वरुप लोगों के लिए प्रकाश स्तम्भ है जिसमें

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मन मोरा।।

सो मनु सदा रहत तोहि पांहीं। जानु प्रीति रस एतनेहि मांहीं।।

श्रीरामचरितमानस में प्रेम का जो आदर्श रखा गया है, जिस समर्पण भावना की बात कही गयी है, जिस एकनिष्ठता की चर्चा है, वही भारतीय लोक का आदर्श है। वही सदियों से वरेण्य है। भारतीय जन ने उसी को स्वीकार किया है। एक पत्निव्रता श्रीराम ने परिवारों का एक आदर्श रूप रखा है।

लंका में हनुमान दूत के रूप में जाते हैं तब अथवा अंगद को राजदूत बनाकर भेजा जाता है तब भी उनका व्यवहार एक विशिष्ट आचरण का परिचायक है। लंका की सभा में अंगद की वाक्पटुता देखने ही लायक है।

इस महाकाव्य में अनेकों प्रसंग ऐसे हैं, जिसमें परम्परा का सुन्दर नियोजन हुआ है। जिसने भारतीयता को सहेजने में सहायता की है और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए नियामक रही है। इस महान ग्रन्थ को भारतीय समाज में स्वीकृति भी इसी लिए प्राप्त है कि यह हमें कदम कदम पर एक उदाहरण देकर बताती हैं कि हमें क्या करना है और किस भांति से। सूत्र रूप में और कहीं कहीं विस्तार से इन आचरण सम्बन्धी कार्यकलाप और उपदेश को पिरोया गया है।

वस्तुतः श्रीराम और कथा में आये अन्य चरित्रों के जीवन की इस महाकथा में सभी प्रसंग एक आदर्श की स्थिति को अभिव्यक्त करते हैं। यह महाग्रंथ भारतीय लोगों के जीवन को बहुत गहरे स्तर तक प्रभावित करता चला आ रहा है तो इसी कारण से कि इसमें सभी चरित्रों की रचना एक आदर्श स्थिति के निमित्त है। पाँच सौ वर्षों से श्रीराम का जीवन भारतीय लोगों के लिए एक आदर्श की तरह है। आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, पति, भाई, मित्र, स्वामी और प्रतिद्वंद्वी श्रीराम हैं। इसलिए उनका हर कार्य व्यवहार एक सामान्य मानवी के लिए आचार का अंग है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन और उनके द्वारा किया गया कार्य सदाचार का अंग है।

यह अनायास नहीं है कि श्रीरामचरितमानस सदियों से उत्तर भारत के लोक का कंठाहार बना हुआ है। इसका हर कार्य कलाप लोकाचार का अंग है और आज जिन सदाचारों की चर्चा होती है, उसमें इस महान ग्रन्थ की बड़ी भूमिका है। यह सहज ही देखा जा सकता है कि गंगा-यमुना के तीरी क्षेत्रों में जहाँ बाहरी आक्रमणों का सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ा है और सांस्कृतिक दूषण का वातावरण बना है, वहां श्रीरामचरितमानस आलोक स्तम्भ की तरह मार्गदर्शन कर रहा है। इसी कारण से यह ग्रन्थ सामूहिक वाचन और पाठ का आधार है। दुनिया की कोई दूसरी पुस्तक ऐसी नहीं, जिसका इस सामूहिकता से पाठ होता हो। यह लोकाचरण का आधार ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ ने लोगों में जीवनेच्छा बनाये रखने में बहुत सहायता की है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास का वर्णन करते हुए भले यह उदगार व्यक्त किया था कि उनके काव्य से लोगों की जीवनेच्छा बनी रही, सत्य तो यह है कि तुलसीदास ने इस महाग्रंथ से असली संस्कार किया और लोकाचरण को निरन्तर परिष्कृत किया। इसलिए श्रीरामचरितमानस की चर्चा के समय यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि यही वह कृति है जिसने हिन्दुओं को संस्कारित किया। और आज भी कर रहा है। इस दृष्टि से भी यह ग्रन्थ चिरकाल तक महत्त्व पाता रहेगा।

डॉ रमाकान्त राय

सहायक प्राध्यापक

पंचायत राज राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा

9838952426

royramakantrk@gmail.com